सावधानियां

- विसंक्रमण के दौरान सुरक्षात्मक मास्क पहनें
- आंखों / त्वचा के सीधे (तीव्र) संपर्क से बचें
- निर्मूल घोल श्वांस या मुह के द्वारा शरीर के अंदर नहीं जाना चाहिए
- निर्मूल घोल बेहतर हवादार क्षेत्र में तैयार करें
- निर्मूल को बच्चों की पहुंच से दूर रखें

शेल्फ की समय सीमा

❖ एक साल (विनिर्माण की तारीख से)

निर्मूल के लाभ

✓ सभी प्रमुख रेशमकीट रोगजनकों के विरुद्ध प्रभावी
✓ लागत प्रभावी, पर्यावरण व उपयोगकर्ता के अनुकूल
✓ पानी में सहज तौर पर घुलनशील एवं अधि - स्थिरता
✓ सहज व तीव्र रोगाणुनाशन तैयार करने की पद्धति
✓ गैर-क्लोरीन और फॉर्मलाडिहाइड आधारित उत्पाद
✓ गैर-संक्षारक व गंधहीन

रोगाणुनाशन हेतु अनुमानित व्यय
रु. 120/- (100 रोमुच या 400 वर्ग फीट)
लाभ – लागत अनुपात = 6.8 : 1

के. राहुल, एम. राभा व वी. शिवप्रसाद

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें

निदेशक, केरेउअवप्रसं, बहरमपुर – 742 101, पश्चिम बंगाल
Tel: 03482-224713, EPABX: 224716/17/18
Fax: 03482-224714/224890
Email: csrtiber@gmail.com; csrtiber.csb@nic.in
www.csrtiber.res.in

East North East Silk CSRTIBerhampore

निर्मूल

रेशम कृषि हेतु पर्यावरण व उपयोगकर्ता अनुकूल एक सामान्य रोगाणुनाशी

पेटेंट हेतु प्रस्तुत किया गया है

केरेउअवप्रसं - बहरमपुर

केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान
केन्द्रीय रेशम बोर्ड, वस्त्र मंत्रालय

केरेउअवप्रसं
केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान
केन्द्रीय रेशम बोर्ड, वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार
बहरमपुर - 742 101, पश्चिम बंगाल

निर्मूल

रेशम कृषि हेतु पर्यावरण व उपयोगकर्ता अनुकूल एक सामान्य रोगाणुनाशी

रेशमकीट रोग

- विषाणु, जीवाणु, कवक व माइक्रोस्पोरिडिया रेशमकीट रोगों का कारण बनते हैं (ग्रैसरी, फ्लैचेरी, मस्कार्डिन एवं पेब्रिन)
- अनुमानित फसल हानि/100 रोमुच 10-15 किग्रा
- प्रतिकूल मौसमों में रोग का प्रसार अधिक होता है (ज्येष्ठ, श्रावनी, भादुड़ी एवं अश्विना)

निर्मूल का उपयोग कर विसंक्रमण

वर्तमान समय में, पूर्वी तथा उत्तर-पूर्वी भारत के रेशम कृषक कीटपालन गृह व उपकरणों के रोगाणुनाशन हेतु 5% ब्लीचिंग पाउडर या 500 पीपीएम क्लोरीन डाइऑक्साइड के घोल का उपयोग कर रहे हैं। छोटे पैमाने पर घर शोधन धूमक का उपयोग भी इस प्रयोजन हेतु किया जाता है। इनमें से ज्यादातर द्रव्य स्प्रे रोगाणुनाशन के कई नुकसान अर्थात् क्लोरीन आधारित, गैर-पर्यावरण के अनुकूल एवं संक्षारक हैं। हाल ही में, केरेउअवप्रसं – बहरमपुर द्वारा पर्यावरण व उपयोगकर्ता के अनुकूल कीटपालन गृह व उपकरणों के रोगाणुनाशन हेतु सक्रिय ऑक्सीडेटिव पदार्थ से युक्त एक निर्मूल नामक रोगाणुनाशन विकसित किया गया है। निर्मूल, सभी प्रमुख रेशमकीट रोगों से संबंधित रेशमकीट रोगजनकों को निष्क्रिय करता है

निर्मूल द्वारा रेशमकीट रोगजनकों को निष्क्रिय किया गया

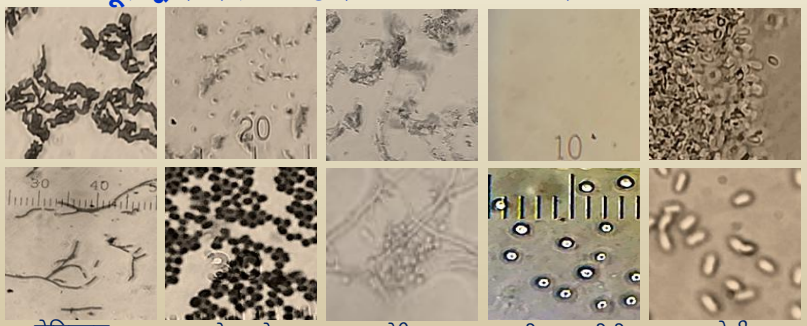

निर्मूल रोगाणुनाशन घोल की तैयारी

- एक जार में 100 लीटर पानी लें
- पानी में निर्मूल (2 किग्रा) को डालें
- निर्मूल रोगाणुनाशन घोल तैयार करने हेतु अच्छे से मिलाएं
- स्प्रेयर के द्वारा कीटपालन गृह व उपकरणों को तर-बतर कर दें
- निर्मूल से रोगाणुनाशन करने के पश्चात स्प्रेयर को अच्छे से साफ कर लें

निर्मूल की आवश्यकता

- ✓ **रोगाणुनाशन निर्मूल घोल की आवश्यकता = 1.5 लीटर/वर्ग मी या 140 मिली/वर्ग फीट क्षेत्र के लिए (3 मीटर/10 फीट ऊंचाई वाले कमरे) या 100 लीटर/100 रोमुच**
- ✓ **कीटपालन गृह के आस-पास के क्षेत्रों को विसंक्रमित करने हेतु अतिरिक्त 10% निर्मूल रोगाणुनाशन घोल आवश्यक है।**
- ✓ **कीटपालन गृह की ऊंचाई मी./फीट बढ़ने के साथ ही अतिरिक्त 500 मिली/वर्ग मी या 14 मिली/वर्ग फीट निर्मूल रोगाणुनाशन घोल आवश्यक है।**

अन्य रोग प्रबंधन के उपाय

- ✓ **कीटपालन गृह के आस-पास के क्षेत्रों का नियमित अंतराल पर रोगाणुनाशन करें**
- ✓ **व्यक्तिगत व कीटपालन गृह की साफ-सफाई का ध्यान रखें**
- ✓ **संस्तर रोगाणुनाशी का अनुप्रयोग (लेबेक्स/सेरिसिलीन)**
- ✓ **इष्टतम तापमान व आर्द्रता के अंतर्गत रेशम कीटपालन करें**
- ✓ **उत्तरावस्था लार्वा का अंतराल (700 - 800 वर्ग फीट/100 रोमुच)**
- ✓ **पौष्टिक शहतूत की पत्तियाँ क अशन करें**